Journal of Frontiers in Multidisciplinary Research

ब्रजभाषा कवियों की भाषा शैली और उनके योगदान का समालोचनात्मक अध्ययन

अनुबाला [1*], डॉ. दिग्विजय के. शर्मा [2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, संस्कृति विश्वविद्यालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध निर्देशक, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, संस्कृति विश्वविद्यालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

* Corresponding Author: **डॉ. दिग्विजय के. शर्मा**

Article Info
E-ISSN: 3050-9726
P-ISSN: 3050-9718
Impact Factor (RSIF) = 7.34
Volume: 06
Issue: 01
January-June 2025
Received: 28-03-2025
Accepted: 24-04-2025
Published: 15-05-2025
Page No: 297-301

सारांश
ब्रजभाषा मध्यकालीन हिंदी की प्रमुख साहित्यिक बोली रही है, जिसमें भक्तिकालीन कवियों ने कृष्णभक्ति, प्रेम, वात्सल्य, नारी-भावना, सांस्कृतिक चेतना और धार्मिक समरसता को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया। इस शोध पत्र का उद्देश्य ब्रजभाषा के प्रमुख कवियों—सूरदास, रसखान, मीरा बाई, बिहारीलाल, नंददास आदि की भाषा शैली की विश्लेषणात्मक विवेचना करना और उनके साहित्यिक व सांस्कृतिक योगदान को रेखांकित करना है। ब्रजभाषा की कोमलता, माधुर्य, लयात्मकता और भावप्रवणता ने इसे भक्तिकाव्य के लिए आदर्श माध्यम बनाया। सूरदास के पदों में वात्सल्य और भक्ति की गूढ़ता है, मीरा के गीतों में आत्मनिष्ठ भाव और विरह है, रसखान के काव्य में सांप्रदायिक सौहार्द और कृष्णप्रेम की निर्बाध लहर है, वहीं बिहारी के दोहों में अलंकारिक सघनता और शैलीगत निपुणता दिखाई देती है।भाषा शैली की दृष्टि से इन कवियों ने ब्रजभाषा में छंद, रस, अलंकार, प्रतीक, बिंब और संप्रेषणीयता का अद्भुत समन्वय किया है। उन्होंने जनजीवन, लोकपरंपराओं और धार्मिक अनुभूतियों को इतनी गहराई से अभिव्यक्त किया कि उनकी रचनाएँ न केवल साहित्यिक रूप से विशिष्ट हैं, बल्कि सांस्कृतिक दस्तावेज के रूप में भी मूल्यवान हैं।
ब्रजभाषा कवियों का योगदान केवल काव्य रचना तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने भारतीय समाज में नैतिकता, करुणा, समरसता, आस्था और सांस्कृतिक एकता को भी सुदृढ़ किया। विशेषतः मीरा बाई और रसखान जैसे कवियों ने स्त्री और मुस्लिम दृष्टिकोण से भक्ति को नया आयाम दिया। उनके साहित्य में वर्ग, धर्म और लिंग की सीमाएँ लांघकर एक सार्वभौमिक मानवीय चेतना मुखरित होती है। इस प्रकार, ब्रजभाषा कवियों की काव्यशैली भावनात्मक संप्रेषण, कलात्मक प्रस्तुति और लोकसंस्कृति के घनिष्ठ संबंध का उत्कृष्ट उदाहरण है। उनके काव्य न केवल साहित्यिक आदर्श प्रस्तुत करते हैं, बल्कि आज भी सांस्कृतिक समारोहों, भक्तिपरक गायन, लोकगीतों और नृत्य-नाट्य परंपराओं में जीवित हैं।
ब्रजभाषा काव्य परंपरा ने हिंदी साहित्य को गहराई, भावप्रवणता, और व्यापक सांस्कृतिक दृष्टिकोण प्रदान किया है। ब्रजभाषा कवियों की भाषा शैली और उनका योगदान हिंदी साहित्य के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय है, जो न केवल अध्ययन के योग्य है, बल्कि अनुकरणीय भी।

DOI: https://doi.org/10.54660/.JFMR.2025.6.1.297-301

Keywords: ब्रजभाषा, समाज, सांस्कृतिक, भक्ति, साहित्य, योगदान

प्रस्तावना
भारतीय साहित्य की विविध भाषाओं में ब्रजभाषा को एक विशेष स्थान प्राप्त है। यह भाषा न केवल अपनी मधुरता और भावप्रवणता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि इसके माध्यम से अनेक अमर काव्य रचनाएँ भी हुई हैं जिन्होंने साहित्य के क्षेत्र में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। हिंदी साहित्य के इतिहास में जब भक्ति आंदोलन अपने चरम पर था, उस समय ब्रजभाषा ने न केवल धार्मिक चेतना को स्वर दिया,

बल्कि काव्य को लोक के निकट भी लाया।
ब्रजभाषा की विशेषता यह है कि इसमें भावनाओं को अत्यंत सहज, कोमल और संगीतात्मक ढंग से व्यक्त किया जा सकता है। यही कारण है कि सूरदास, रसखान, बिहारी, केशवदास जैसे महत्त्वपूर्ण कवियों ने ब्रजभाषा को अपने काव्य का माध्यम बनाया। उन्होंने न केवल इस भाषा को साहित्यिक प्रतिष्ठा प्रदान की, बल्कि इसे जन-जन की भाषा बनाकर आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना को भी जागृत किया। हज़ारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "भक्ति काल में ब्रजभाषा न केवल काव्य का माध्यम बनी, बल्कि वह आत्मा की वाणी बनकर जन-जन तक पहुँची।"[1]

यह शोध पत्र मुख्यत
ब्रजभाषा के प्रमुख कवियों की भाषा-शैली और उनके साहित्यिक योगदान पर केंद्रित है। इसमें यह विवेचन किया गया है कि कैसे इन कवियों ने अपनी भाषा में नूतन प्रयोग किए, किस प्रकार उन्होंने भावों की अभिव्यक्ति को नए रूप दिए, और किस हद तक उनके साहित्य ने समकालीन समाज और संस्कृति को प्रभावित किया। भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं होती, वह संवेदना, संस्कृति और चेतना की वाहक भी होती है। ब्रजभाषा में रचे गए काव्य न केवल धार्मिक या भावनात्मक मूल्यों के प्रतिबिंब हैं, बल्कि वे सामाजिक सन्देश, सौंदर्यबोध और कलात्मकता के भी अद्वितीय उदाहरण हैं।
ब्रजभाषा कवियों का साहित्यिक योगदान और उनकी भाषा शैली न केवल अध्ययन के योग्य है, बल्कि आज के साहित्यिक, भाषिक और सांस्कृतिक विमर्शों में भी इसकी अत्यंत प्रासंगिकता है।

ब्रजभाषा का उद्भव और स्वरूप
ब्रजभाषा हिन्दी की पश्चिमी उपशाखा की एक प्रमुख उपभाषा है, जिसका मूल क्षेत्र वर्तमान उत्तर प्रदेश के मथुरा, वृंदावन, आगरा, अलीगढ़, हाथरस, इटावा, एटा, और धौलपुर जैसे इलाके माने जाते हैं। 'ब्रज' शब्द का संबंध भगवान श्रीकृष्ण की लीलाभूमि 'ब्रजमंडल' से है, जहाँ इस भाषा का प्राकृतिक विकास हुआ। यह भाषा शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई है, जो कि संस्कृत और प्राकृत की एक शृंखला से होकर हिन्दी तक पहुँची।
प्रारंभिक हिन्दी के विकास में शौरसेनी अपभ्रंश का विशेष स्थान रहा है। शौरसेनी से विकसित होने वाली अनेक बोलियों में से ब्रजभाषा ने साहित्यिक अभिव्यक्ति के क्षेत्र में अग्रणी स्थान प्राप्त किया। यह मुख्यतः 14वीं से 18वीं शताब्दी के बीच अपने उत्कर्ष पर थी, जब भक्ति आंदोलन पूरे उत्तर भारत में प्रसारित हो रहा था।
ब्रजभाषा का साहित्यिक प्रयोग विशेषतः भक्ति काव्य में हुआ। इस भाषा की प्रमुख विशेषता उसकी कोमल ध्वनियाँ, लयबद्धता और संगीतमयता है, जिससे यह काव्य रचना के लिए अत्यंत उपयुक्त मानी गई। यही कारण है कि अधिकांश भक्त कवियों ने इसे ही अपने भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया।
ब्रजभाषा की शब्दावली में प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत और देशज शब्दों का समावेश मिलता है। इसकी ध्वनि प्रणाली कोमल और सुगम है, जिससे इसका उच्चारण कर्णप्रिय बनता है। इसमें 'र' और 'ष' जैसे कठोर उच्चारणों की अपेक्षा 'ल', 'स', 'न', 'म' आदि कोमल ध्वनियों का प्रयोग अधिक मिलता है। ब्रजभाषा की एक प्रमुख विशेषता इसकी संगीतमयता है। यही गुण उसे गीतात्मक काव्य के लिए सबसे उपयुक्त बनाता है। इसके अलावा, इसकी व्याकरणिक संरचना अपेक्षाकृत सरल और प्रवाहपूर्ण होती है, जिससे भावों की अभिव्यक्ति सहज हो जाती है।
ब्रजभाषा केवल भाषा नहीं, एक संपूर्ण सांस्कृतिक चेतना है। यह भगवान कृष्ण की बाल लीलाओं, रासलीला, गोपियों के प्रेम, राधा-कृष्ण के संवादों आदि के माध्यम से एक व्यापक धार्मिक एवं सामाजिक चेतना को प्रस्तुत करती है। यही कारण है कि यह भाषा केवल साहित्य में नहीं, बल्कि लोकगीतों, कथाओं, नृत्यों और मंचन में भी जीवित है।

प्रमुख ब्रजभाषा कवि एवं उनकी भाषा शैली
ब्रजभाषा साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध परंपरा की संवाहक रही है, जिसके कवियों ने अपनी भाषा-शैली, विषयवस्तु और भाव-प्रवणता से हिन्दी साहित्य को बहुमूल्य धरोहर प्रदान की। इन कवियों की भाषा शैली में भावात्मकता, संगीतमयता, चित्रात्मकता तथा लोक-गम्यता के अद्भुत समन्वय के दर्शन होते हैं। निम्नलिखित प्रमुख ब्रजभाषा कवियों के माध्यम से इस शैलीगत विशेषता को अधिक गहराई से समझा जा सकता है-
1. सूरदास (1478-1583 ई.)- सूरदास को भक्ति काल का सर्वोच्च कवि माना जाता है। वे " अष्टछाप "के प्रमुख सदस्य थे और कृष्ण-भक्ति की वात्सल्य धारा के प्रवर्तक माने जाते हैं। उनकी प्रसिद्ध रचना "सूरसागर" है, जिसमें उन्होंने श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं का ऐसा हृदयस्पर्शी चित्र खींचा है कि पाठक सहसा उसमें खो जाता है।
सूरदास की भाषा शैली अत्यंत भावनात्मक, चित्रात्मक और आत्मीय है, जो पाठकों को सीधे हृदय से जोड़ती है। उन्होंने ब्रजभाषा का अत्यंत सहज, प्रवाहपूर्ण और माधुर्यपूर्ण प्रयोग किया है, जिससे उनकी रचनाएँ सरस एवं प्रभावशाली बन गई हैं। उनके काव्य में अनुप्रास, रूपक, उपमा जैसे अलंकारों का कलात्मक प्रयोग मिलता है, जो उनकी अभिव्यक्ति को और भी सौंदर्यपूर्ण बना देता है। सूरदास की रचनाओं में मुख्य रूप से वात्सल्य रस की प्रधानता है, जिसमें श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का सजीव चित्रण हुआ है, साथ ही शृंगार रस की भी सुन्दर झलक मिलती है। उनकी भाषा में गेयता और संगीतमयता इतनी प्रबल है कि उनके पदों को सुनते ही मन गद्गद हो उठता है। यही गुण उनकी भाषा को प्रभावशाली और कालजयी बनाते हैं।
उदाहरण-

"माँग के कछु न दीजै, गोद लिए बैठार।
कर में कौपीन धरि, मुख में मुसकाय।।"[2]

इस पद में मातृत्व की कोमल भावनाएँ और बालकृष्ण की मासूम चेष्टाएँ एक साथ प्रतिबिंबित होती हैं।
सूर की भाषा में कोई कृत्रिमता नहीं है। वह अत्यंत सहज, सुगम और भाव-संपन्न है। उन्होंने कृष्ण को केवल भगवान नहीं, अपितु एक सजीव, चंचल और कोमल बालक के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे जनमानस गहराई से जुड़ सका।आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, "सूरदास ने बालकृष्ण के माध्यम से वात्सल्य रस को चरम तक पहुँचाया।"[3]
2. रसखान (1580-1610 ई.)- रसखान का असली नाम सैयद इब्राहीम था। वे एक मुस्लिम कवि थे, जिन्होंने कृष्णभक्ति की ऐसी अलौकिक अभिव्यक्ति दी कि उनकी गिनती भक्तिकाल के महान कवियों में होती है। उनका जीवन ही धार्मिक समन्वय का प्रतीक बन गया ।
रसखान की भाषा शैली माधुर्य और संगीतमयता से परिपूर्ण है, जिसमें ब्रजभाषा का सरस और भावनात्मक रूप दिखाई देता है। उन्होंने अपनी काव्य रचनाओं में प्रकृति, प्रेम और भक्ति का अत्यंत सुंदर समन्वय प्रस्तुत किया है, जिससे उनकी कविताएँ हृदय को स्पर्श करती हैं। रसखान ने राधा-कृष्ण की लीलाओं का सजीव चित्रण अत्यंत सहज और चित्रात्मक भाषा में किया है, जिससे पाठक उन दिव्य दृश्यों में खो जाता है। उनकी शब्दावली सरल है, परंतु उसमें भावों की गहनता और भक्ति की गहराई स्पष्ट रूप से प्रकट होती है।

उनकी भाषा में न केवल सौंदर्य और माधुर्य है, बल्कि उसमें सांस्कृतिक समर्पण और धार्मिक सहिष्णुता की भावभूमि भी दिखाई देती है।
उदाहरण-

"मानुष हौं तो वही रसखान, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पशु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।"[4]

रसखान की भाषा न केवल भक्ति से ओतप्रोत है, बल्कि उसमें सांस्कृतिक समन्वय और समर्पण की गहराई भी है।
उन्होंने ब्रजभूमि के प्रति जिस प्रेम का प्रदर्शन किया, वह उनकी रचनाओं की आत्मा बन गया है।
3. बिहारी (1603-1663 ई.) – बिहारीलाल का नाम रीति काल के श्रेष्ठ कवियों में आता है। उनकी एकमात्र रचना "बिहारी सतसई" में 700 से अधिक दोहे संकलित हैं, जिनमें श्रृंगार रस, नीति, राजनीति, और सामाजिक व्यंग्य की भावपूर्ण झलक है। बिहारी की भाषा शैली लघुता में गंभीरता की अद्भुत मिसाल प्रस्तुत करती है। उनके दोहे छोटे होने के बावजूद गूढ़ अर्थों और गहन भावों से परिपूर्ण होते हैं। उन्होंने व्यंजना और वक्रोक्ति जैसे काव्यात्मक साधनों का अत्यंत कुशलता से प्रयोग किया है, जिससे उनके दोहों में निहित अर्थ कई स्तरों पर खुलते हैं। उनकी शैली में लाक्षणिकता और व्यंजनात्मकता का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है, जो पाठक को सोचने और रस ग्रहण करने के लिए प्रेरित करता है। बिहारी का काव्यशिल्प अत्यंत परिपक्व है, जिसमें छंद-सौंदर्य, अलंकार योजना और शब्द चयन का गहरा सामंजस्य दिखाई देता है। उनकी भाषा अत्यंत सघन, कलात्मक और प्रभावशाली है, जो उन्हें रीति काल के अद्वितीय कवियों की श्रेणी में प्रतिष्ठित करती है।
उदाहरण-

"कहत, नटत, रीझत, खिजत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौंह से तीर ज्यों, नैनन हीं सिख जात।।"[5]

बिहारी के दोहों में भाषा केवल शब्दों का संयोग नहीं, बल्कि गूढ़ अनुभव का गहन संकेत है। उन्होंने ब्रजभाषा को अलंकारों, प्रतीकों और संकेतों की दुनिया में समृद्ध किया।
4. केशवदास (1555-1617 ई.)- केशवदास संस्कृत परंपरा के मर्मज्ञ कवि थे, जिन्होंने रीति काव्य को ब्रजभाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। रसिकप्रिया, रामचंद्रिका और वीर सिंहदेव चरित उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।केशवदास की भाषा शैली संस्कृतनिष्ठ, गम्भीर और गरिमामयी है, जिसमें ब्रजभाषा को शास्त्रीय परंपरा से जोड़ने का सफल प्रयास दिखाई देता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में संस्कृत के शास्त्रीय तत्वों का संयोजन अत्यंत कुशलता से किया, जिससे उनकी भाषा में विद्वत्ता की झलक स्पष्ट रूप से मिलती है। उनकी काव्य भाषा में वीर रस और नीति के विषयों का सशक्त समावेश हुआ है, जो उनके काव्य को उद्देश्यपूर्ण और प्रेरणादायक बनाता है। केशवदास की रचनाओं की भाषा गूढ़ अर्थों से युक्त होती है, जिसमें आलंकारिक सौंदर्य और भाषिक चातुर्य की विशेष छाप दिखाई देती है। उनकी शैली में गंभीरता और कलात्मकता का ऐसा संतुलन है, जो पाठक को गहराई से प्रभावित करता है।
उदाहरण-

"काव्य केशव कहत हैं, रसिकजन राखहिं मान।
भाव, शब्द, छंद, लय, अलंकारन को खान।।"[6]

केशवदास ने ब्रजभाषा को गाम्भीर्य और क्लासिक पुट प्रदान किया। उनकी शैली में तर्क और भावना दोनों का अद्भुत समन्वय है।
5. मीराबाई (1498-1547 ई.)- मीराबाई मध्यकालीन भक्तिकाल की एक महान संत-कवयित्री थीं।उन्होंने श्रीकृष्ण को अपना पति, आराध्य और जीवन का एकमात्र उद्देश्य मान लिया। सामाजिक विरोध, पारिवारिक अवहेलना और अनेक कठिनाइयों के बावजूद मीरा अपने भक्ति मार्ग पर अडिग रहीं।मीराबाई की भाषा शैली अत्यंत सरल, भावप्रधान और हृदयस्पर्शी है।
उन्होंने अपने काव्य में ब्रजभाषा, राजस्थानी और लोकभाषा के मेल से एक ऐसी शैली विकसित की जो न केवल भक्तिमयी है, बल्कि सहज संप्रेषणीय भी है। मीरा के पदों में किसी प्रकार की कृत्रिमता या आडंबर नहीं है; वे सीधे हृदय से निकले हुए भाव हैं जो सीधे पाठक और श्रोता के मन को छूते हैं। उनकी भाषा में भक्ति की तीव्रता और प्रेम की पराकाष्ठा दिखाई देती है।
उनके पदों में विरह, तड़प, सामाजिक बंधनों से मुक्ति की आकांक्षा और आध्यात्मिक मिलन की लालसा को अत्यंत मार्मिक शैली में व्यक्त किया गया है। उदाहरण –

"मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई "[7]

इसमें भक्ति का वह स्वरूप है जो सांसारिक आकर्षणों को नकार कर एकमात्र कृष्ण-प्रेम में लीन हो जाता है।

6. नंददास, परमानंददास, चितस्वामी एवं अन्य कवि – नंददास, परमानंददास, चितस्वामी एवं अन्य समकालीन कवियों की भाषा-शैली ब्रजभाषा की सरलता, आत्मीयता और भावात्मक गहराई का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती है। इनकी रचनाओं में भक्ति रस की प्रधानता है, विशेषतः श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं, रासलीला, प्रेम और विरह के प्रसंगों का अत्यंत जीवंत और मार्मिक चित्रण मिलता है। इन कवियों ने शुद्ध ब्रजभाषा का प्रयोग करते हुए लोकभाषा की सादगी और संस्कृत के शास्त्रीय तत्वों का सुंदर समन्वय किया, जिससे इनकी कविता सहज होकर भी गंभीर अर्थवत्ता लिए हुए प्रतीत होती है। इनकी शैली में भावनात्मक अंतरंगता, भक्तिपूर्ण आत्मनिष्ठा और दर्शन का समावेश दिखता है, जो पाठक या श्रोता को सीधे हृदय से जोड़ता है।
ब्रजभाषा के प्रमुख कवियों की भाषा शैली में अद्वितीय विविधता और सौंदर्य की पराकाष्ठा देखी जा सकती है। सूरदास की वात्सल्यात्मकता, रसखान की समर्पणमयी भक्ति, बिहारी की सूक्ष्म व्यंजना, और केशवदास की शास्त्रीय गरिमा- ये सभी ब्रजभाषा की साहित्यिक उपलब्धियों के विविध आयाम हैं।
इनकी भाषा शैली केवल सौंदर्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है, अपितु वह समाज और संस्कृति के गहन संदर्भों को भी अभिव्यक्त करती है। आज भी ब्रजभाषा में रचित ये काव्य रचनाएँ साहित्य, संगीत, नाट्य और धार्मिक अनुष्ठानों में जीवंत हैं, और हिन्दी साहित्य के उत्कर्ष का प्रतीक बनी हुई हैं।

ब्रजभाषा कवियों का साहित्य में योगदान

ब्रजभाषा हिन्दी की एक अत्यंत समृद्ध और भावपूर्ण उपभाषा रही है, जिसमें मध्यकालीन भारत के काव्य-सृजन की प्रमुख धारा प्रवाहित हुई। ब्रजभाषा के कवियों ने साहित्य के विभिन्न आयामों को न केवल समृद्ध किया, बल्कि भाषा, भाव, रस, लोकचेतना और सांस्कृतिक समन्वय को भी व्यापक आधार प्रदान किया। इनका योगदान निम्नलिखित पहलुओं में विशेष रूप से उल्लेखनीय है-

1. **भक्ति साहित्य का संवर्धन** -भक्ति आंदोलन हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक क्रांतिकारी परिवर्तन का प्रतीक था। इस आंदोलन को सशक्त आधार देने का कार्य ब्रजभाषा कवियों ने

किया। विशेषतः कृष्ण भक्ति की धारा में ब्रजभाषा ने वह भावगर्भिता, आत्मीयता और सौंदर्यपूर्ण संप्रेषण प्रदान किया, जो किसी अन्य भाषा में सहज नहीं है।

2. **सूरदास के पदों में बालकृष्ण की चेष्टाओं का अत्यंत कोमल और वात्सल्यपूर्ण चित्रण मिलता है।** उनका भक्ति काव्य दर्शन, भक्ति और प्रेम का अद्‌भुत समन्वय है। रसखान ने एक मुस्लिम होकर भी जिस भक्ति-भाव से कृष्ण के प्रति प्रेम व्यक्त किया, वह धार्मिक सीमाओं से परे जाकर मानवीय संवेदना की चरम अवस्था को दर्शाता है। नंददास, परमानंददास और हिति हरिवंश जैसे कवियों ने कृष्णलीला, रासलीला, और गोपियों की भक्ति को अत्यंत मधुरता से चित्रित किया। ब्रजभाषा के माध्यम से भक्ति साहित्य जनसाधारण तक पहुँचा और जन-जन में आध्यात्मिक चेतना जागृत हुई।
3. **जनभाषा में साहित्य सृजन की परंपरा**- ब्रजभाषा कवियों ने साहित्य को दरबारी, संस्कृतनिष्ठ या शास्त्रीय जटिलताओं से मुक्त कर जनभाषा में प्रस्तुत किया। उस काल में जब साहित्य अभिजनों तक सीमित था, ब्रजभाषा में रचित काव्य ने आम जनता को भाषा, काव्य और दर्शन से जोड़ा। इससे साहित्य का लोकतंत्रीकरण हुआ और विचारों का प्रवाह समाज के सभी वर्गों तक पहुँचा। ब्रजभाषा के कवियों ने यह सिद्ध किया कि जनभाषा में भी उच्च कोटि का साहित्य रचा जा सकता है। उनकी रचनाओं में सहजता, स्वाभाविकता और हृदयग्राही भावनाएँ हैं, जो श्रोताओं और पाठकों को सहज ही प्रभावित करती हैं। यह परंपरा बाद में आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास की नींव बनी।
4. **भाषा एवं रसों की परिष्कृत प्रस्तुति** – ब्रजभाषा कवियों की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उन्होंने भाषा को केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं माना, बल्कि उसे एक जीवंत, रसात्मक और कलात्मक अस्तित्व प्रदान किया। सूरदास के काव्य में वात्सल्य और श्रृंगार रस की अनूठी अभिव्यक्ति मिलती है, जहाँ एक माता का वात्सल्य और एक प्रेमिका की विरह-वेदना दोनों का सामंजस्य है। बिहारीलाल के दोहे नीति, व्यंग्य, और श्रृंगार के सटीक उदाहरण हैं, जिनमें भाषा की सूक्ष्मता, लाक्षणिकता और गूढ़ अर्थ विद्यमान हैं। रसखान ने प्रेम और भक्ति रस में जो सौंदर्य रचा, वह भाषा की भावगर्भिता का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस परिष्कार ने ब्रजभाषा को रस-सिद्ध काव्य भाषा के रूप में स्थापित किया।
5. **स्त्री चेतना और लोक जीवन का चित्रण**- ब्रजभाषा काव्य में स्त्रियों विशेषकर गोपियों का चित्रण केवल भक्त या प्रेमिकाओं के रूप में नहीं, बल्कि संवेदनशील, भावुक और सजीव व्यक्तित्वों के रूप में हुआ है। कृष्ण से उनका प्रेम भक्ति की चरम अवस्था को प्रकट करता है, जिसमें प्रतीक्षा, विरह, समर्पण और संकोच जैसे अनेक भाव व्यक्त हुए हैं। गोपियों के माध्यम से स्त्री मन की गहराइयाँ, उनकी भावनात्मक जटिलताएँ और सामाजिक स्थिति को अत्यंत सूक्ष्मता से रेखांकित किया गया है। साथ ही, इस काव्य में लोक जीवन—गाँव, पर्व, तीज-त्योहार, मौसम, कृषि-जीवन और ग्रामीण संवेदनाओं का भी जीवंत चित्रण मिलता है, जिससे यह काव्य जनजीवन का दर्पण बन गया।
6. **हिंदी कविता की रूपात्मक विविधता में योगदान** – ब्रजभाषा कवियों ने हिन्दी कविता को केवल विषय की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि उसकी शिल्पात्मक संरचना में भी नवीनता और विविधता प्रदान की। उन्होंने पद, सवैया, दोहा, कुंडलिया, रास जैसे विविध छंदों में रचना कर कविता को शिल्प की दृष्टि से बहुआयामी बनाया।
7. **बिहारीलाल के दोहे छंद** और अलंकारों की दृष्टि से अत्यंत परिष्कृत हैं। सूरदास के पदों में संगीतात्मक लय और भावप्रवणता है, जो न केवल पाठ्य बल्कि गायन योग्य भी हैं। इस छंद विविधता और प्रयोगशीलता ने हिन्दी काव्य परंपरा को समृद्ध किया।

6. धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय-

1. **ब्रजभाषा कवियों की रचनाओं में धार्मिक सहिष्णुता का स्पष्ट दर्शन होता है।** रसखान जैसे मुस्लिम कवि का कृष्ण भक्ति में लीन होना इस बात का प्रतीक है कि ब्रजभाषा में रचित साहित्य संप्रदायवाद से ऊपर उठकर समन्वय और उदारता की बात करता है। कवियों ने हिन्दू-मुस्लिम समाज के मध्य सेतु की भूमिका निभाई और एक ऐसी सांस्कृतिक चेतना विकसित की, जिसमें प्रेम, करुणा और मानवीय मूल्यों की प्रधानता थी। यह साहित्य भारत की गंगा-जमुनी संस्कृति का प्रतीक बनकर सामने आया।
2. **काव्य को गेय और भावविह्वल बनाने की परंपरा** – ब्रजभाषा कवियों की रचनाएँ मात्र पठन के लिए नहीं थीं, वे गेय थीं—गाई जाती थीं, झूलों पर झूलते हुए, नृत्य करते हुए, कीर्तन में, भजन में, लोक उत्सवों में। इनकी भाषा में ऐसी लयात्मकता, संगीतात्मकता और भाव-प्रवणता थी कि वे लोकगीतों की भाँति जनमानस में बस गईं। इस परंपरा ने साहित्य को जीवंत रूप दिया। साहित्य केवल विद्वानों तक सीमित न रहकर आम लोगों के हृदय में बसा। यह परंपरा आज भी वृंदावन, मथुरा, बरसाना आदि क्षेत्रों में जीवित है, जहाँ ब्रजभाषा के पद आज भी नित्य गाए जाते हैं।

ब्रजभाषा कवियों का साहित्यिक योगदान बहुआयामी है। उन्होंने हिन्दी साहित्य को न केवल काव्य सौंदर्य, रस वैविध्य और भावप्रवणता प्रदान की, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक चेतना को भी नवीन दिशा दी। उनके साहित्य ने भाषा को लोक और भक्ति के संगम में परिणत कर दिया और एक ऐसी परंपरा का निर्माण किया जो आज भी जीवंत है। यही कारण है कि ब्रजभाषा के कवियों का योगदान साहित्यिक इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

निष्कर्ष

ब्रजभाषा कवियों की भाषा शैली और उनके साहित्यिक तथा सांस्कृतिक योगदान का समालोचनात्मक अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट होता है कि ब्रजभाषा न केवल एक साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम रही, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना की एक सशक्त ध्वजवाहिका भी बनी। इस भाषा में रचे गए काव्य का स्वरूप भावप्रधान, लोकसंलग्न और आध्यात्मिक रहा है। ब्रजभाषा कवियों ने जिस सहजता, माधुर्य और भाववत्ता के साथ ईश्वर, प्रेम, समाज, नारी, लोकजीवन और संस्कृति को व्यक्त किया है, वह हिंदी साहित्य की अनमोल धरोहर है। ब्रजभाषा की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सरलता, लयात्मकता और संप्रेषणीयता है। इस भाषा में न केवल काव्यात्मक सौंदर्य है, बल्कि भावों की गहराई भी सहज रूप में प्रकट होती है। सूरदास की वात्सल्यपूर्ण शैली, रसखान की श्रृंगारिक भक्ति, मीरा की आत्मनिष्ठ भक्ति, नंददास की लीला शैली और बिहारी की अलंकारिक संक्षिप्त शैली—सभी ने मिलकर ब्रजभाषा को विविध रंगों में प्रकट किया। इन कवियों ने भाषा को केवल विचार अभिव्यक्ति का साधन नहीं, बल्कि संवेदनाओं की जीवंत अनुभूति का माध्यम बनाया। उनकी रचनाओं में लोकप्रचलित शब्दों का सुंदर प्रयोग, बिंबों की जीवंतता, भावों की सघनता और अलंकारों की कलात्मकता दिखाई देती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ब्रजभाषा की भाषा

शैली भाव, कला और संगीत का संगम है।ब्रजभाषा कवियों ने हिंदी काव्य को विषयवस्तु, विधा और शैली की दृष्टि से विस्तार प्रदान किया।सूरदास के काव्य ने वात्सल्य को काव्य का प्रमुख विषय बनाया, रसखान ने सांस्कृतिक समरसता का आदर्श प्रस्तुत किया और बिहारी ने दोहे को सौंदर्य के चरम तक पहुँचाया। इन कवियों ने ब्रजभाषा को केवल काव्य भाषा नहीं, बल्कि जनभाषा का साहित्यिक रूप बना दिया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि साहित्यिक सृजन केवल संस्कृत या फारसी जैसी उच्च भाषाओं में ही संभव नहीं, बल्कि जनभाषाएँ भी साहित्य का सशक्त माध्यम हो सकती हैं। ब्रजभाषा कवियों का सबसे व्यापक योगदान भारतीय भक्ति आंदोलन, लोकसंस्कृति और धार्मिक सहिष्णुता को सशक्त रूप में प्रस्तुत करना रहा। उनके काव्य ने श्रीकृष्ण के माध्यम से प्रेम, त्याग, भक्ति और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार किया। उन्होंने लोक परंपराओं को काव्य में स्थान देकर भारतीय समाज की सांस्कृतिक विविधता और एकता को एक नई चेतना प्रदान की। विशेष रूप से मीरा बाई और रसखान जैसे कवियों ने सामाजिक और धार्मिक सीमाओं को तोड़ते हुए सार्वभौमिक भक्ति की भावना को जन्म दिया। उनके काव्य आज भी मंदिरों, उत्सवों, संगीत कार्यक्रमों और धार्मिक आयोजनों का हिस्सा हैं। इससे स्पष्ट होता है कि ब्रजभाषा का साहित्य केवल पुस्तकालयों में पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि जीवन में जीने के लिए रचा गया था।

ब्रजभाषा कवियों की भाषा शैली और उनका साहित्यिक-सांस्कृतिक योगदान हिंदी साहित्य में मील का पत्थर सिद्ध हुआ है। उन्होंने न केवल एक क्षेत्रीय भाषा को काव्य के उच्च शिखर पर पहुँचाया, बल्कि भारतीय संस्कृति के बहुविध पक्षों को भी अपने काव्य में स्वर दिया। उनके साहित्य में करुणा है, भक्ति है, सौंदर्य है, और सबसे महत्वपूर्ण बात—मानवता का बोध है। इस प्रकार, ब्रजभाषा काव्य परंपरा न केवल साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध है, बल्कि वह भारतीय संस्कृति की आत्मा का जीवंत दस्तावेज भी है। यह काव्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना अपने रचनाकाल में था, क्योंकि यह सीधे मनुष्य के हृदय से संवाद करता है।

संदर्भ सूची

1. द्विवेदी, हजारीप्रसाद, हिंदी साहित्य की भूमिका, संस्करण चतुर्थ, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1976, पृ सं 93.
2. सूरदास, सूरसागर, संपादक: डॉ. नगेन्द्र, साहित्य भवन इलाहाबाद, 2002, पृ सं 134.
3. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, संस्करण दस,लोक भारती प्रकाशन वाराणसी,1971,पृ सं 157.
4. रसखान – रसखान रचनावली, संपादक: डॉ. केदारनाथ शर्मा,गीता प्रेस गोरखपुर 1990, पृ सं 58
5. बिहारीलाल, बिहारी सतसई, संपादक: डॉ. रामचंद्र शुक्ल,नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी 1965, पृ सं 74.
6. केशवदास, रसिकप्रिया, संपादक: विश्वनाथ त्रिपाठी। नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी 1982, पृ सं 68.
7. मीराबाई, मीरा पदावली, संपादक: डॉ. लल्लन प्रसाद, साहित्य सदन जयपुर, 1995, पृ सं 41.